नेपियर घास लगाएं, 5 वर्षों तक पशुओं को मिलेगा हरा चारा

❑ प्रशिक्षण कार्यक्रम में शामिल हुए 40 से 50 की संख्या में किसान

प्रशिक्षण कार्यक्रम में मौजूद किसान।

कानपुर, 22 अप्रैल। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉ विजेंद्र सिंह के निर्देशन के क्रम में कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर के द्वारा ग्राम मुरीदपुर में पशुपालन विषय के अंतर्गत पशुओं के चारे की समस्या के निवारण के लिए नेपियर घास की वैज्ञानिक खेती विषय पर प्रशिक्षण आयोजित किया गया। जिसमें पशुपालन वैज्ञानिक डॉ शशिकांत ने किसानों को बताया कि नेपियर घास एक वर्षीय चारे की फसल है।इसके पौधे गन्ने की भांति लंबाई में बढ़ते हैं एक पौधे से 40 से 50 किल्ले निकलते हैं। यह पशुओं के लिए बहुत ही पौष्टिक चारा है। जो सर्दी गर्मी व वर्षा ऋतु में कभी भी उगाया जा सकता है।जब किसानों के पास गर्मी में हरे चारे की किल्लत होती है।उस समय नेपियर घास पशुओं के लिए हरे चारे के रूप में वरदान साबित होता है।किसान भाई इस घास को एक बार लगा लेने पर 5 साल तक लगातार प्रति महीना इससे हरा चारा प्राप्त कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि इसके लगाने के लिए तने के टुकड़े को लेते है जिसमें कम से कम दो गाठे होनी चाहिए। जिसको एक गांठ जमीन में तथा अन्य गांठ जमीन के ऊपर 45 डिग्री के कोण पर टेढ़ा करके लगाते हैं यह पौधे से पौधे की दूरी 60 सेंटीमीटर तथा लाइन से लाइन की दूरी 1 मीटर रखते हैं इस फसल से वर्ष भर में 150 से 200 हरा चारा प्रति हेक्टेयर प्राप्त हो जाता है। वैज्ञानिक मृदा बवैज्ञानिक डॉ. खलील खान ने बताया कि नेपियर घास कई प्रकार की मिट्टियों में उगाई जा सकती है जिसमें प्रचुर मात्रा में जीवांश पदार्थ उपस्थित हो इसके लिए सर्वोत्तम होती है। मृदा का पीएच मान 6.5 से 8 होनी चाहिए। उन्होंने बताया कि चारे में कज्जी प्रोटीन 10 से 11 प्रतिशत इथर 3 प्रतिशत ,रेशा 31 से 32 प्रतिशत,एन एफ ई 45 प्रतिशत एवं भस्म 14 प्रतिशत पाया जाता है। इस मौके पर गांव के प्रगतिशील किसान ईश्वर, धीरेंद्र सिंह, शिवकुमार, धर्मवीर सिंह एवं तकनीकी सहायक गौरव शुक्ला के साथ 55 लोग उपस्थित थे।

राष्ट्रीय सहारा

23/04/2023

'नेपियर घास लगायें, 5 साल तक चारे की चिंता दूर'

कानपुर (एसएनबी)। किसान नेपियर घास एकवार लगा कर पांच साल तक के लिये पशुओं के चारे की चिंता से मुक्त ह्वे सकते हैं। यह वात चंद्रशेखर आजाद कृपि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के वरिप्ठ पशुपालन वैज्ञानिक डॉ.शशिकांत ने किसानों के वीच एक जागरूकता कार्यक्रम में कही। उन्होंने वताया कि इस घास को किसी भी मौसम में उगाया जा सकता है। निवारण के लिए नेपियर घास की वैज्ञानिक खेती विपय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें पशुपालन वैज्ञानिक डॉ शशिकांत ने किसानों को वताया कि नेपियर घास एक वर्पीय चारे की फसल है। इसके पौधे गन्ने की भांति लंवाई में वढ़ते है एक पौधे से 40 से 50 किल्ले निकलते है। यह पशुओं के लिए वहुत ही पौप्टिक चारा है। जो सर्दी गर्मी व वर्पा ऋतु में कभी भी उगाया जा सकता है। जव

शाश्वत टाइम्स

हिन्दी दैनिक

वर्ष : 7, अंक : 320 पृष्ठ : 12
कानपुर महानगर, रविवार
23 अप्रैल, 2023
मूल्य ₹ 3.00

www.shashwattimes.com

नेपियर घास एक बार लगाएं, 5 वर्षों तक पशुओं को खिलाएं हरा चारा: डॉक्टर शशीकांत

शाश्वत टाइम्स

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉ विजेंद्र सिंह के निर्देशन के क्रम में कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर के द्वारा ग्राम मुरीदपुर में पशुपालन विषय के अंतर्गत पशुओं के चारे की समस्या के निवारण के लिए नेपियर घास की वैज्ञानिक खेती विषय पर प्रशिक्षण आयोजित किया गया। जिसमें पशुपालन वैज्ञानिक डॉ शशिकांत ने किसानों को बताया कि नेपियर घास एक वर्षीय चारे की फसल है।इसके पौधे गन्ने की भांति लंबाई में बढ़ते हैं एक पौधे से 40 से 50 किल्ले निकलते हैं। यह पशुओं के लिए बहुत ही पौष्टिक चारा है। जो सर्दी गर्मी व वर्षा ऋतु में कभी भी उगाया जा सकता है।जब किसानों के पास गर्मी में हरे चारे की किल्लत होती है।उस समय नेपियर घास पशुओं के लिए हरे चारे के रूप में वरदान साबित होता है।किसान भाई इस घास को एक बार लगा लेने पर 5 साल तक लगातार प्रति महीना इससे हरा चारा प्राप्त कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि इसके लगाने के लिए तने के टुकड़े को लेते है जिसमें कम से कम दो गाठे होनी चाहिए। जिसको एक गांठ जमीन में तथा अन्य गांठ जमीन के ऊपर 45 डिग्री के कोण पर टेढ़ा करके लगाते हैं यह पौधे से पौधे की दूरी 60 सेंटीमीटर तथा लाइन से लाइन की दूरी 1 मीटर रखते हैं इस फसल से वर्ष भर में 150 से 200 हरा चारा प्रति हेक्टेयर प्राप्त हो जाता है।केंद्र के मृदा बवैज्ञानिक डॉक्टर खलील खान ने बताया कि नेपियर घास कई प्रकार की मिट्टियों में उगाई जा सकती है जिसमें प्रचुर मात्रा में जीवांश पदार्थ उपस्थित हो इसके लिए सर्वोत्तम होती है। मृदा का पीएच मान 6.5 से 8 होनी चाहिए। उन्होंने बताया कि चारे में कच्ची प्रोटीन 10 से 11प्रतिशत, इथर 3 प्रतिशत ,रेशा 31 से 32 प्रतिशत,एन एफ ई 45 प्रतिशत एवं भस्म 14 प्रतिशत पाया जाता है द्य इस मौके पर गांव के प्रगतिशील किसान ईश्वर, धीरेंद्र सिंह, शिवकुमार, धर्मवीर सिंह एवं तकनीकी सहायक गौरव शुक्ला के साथ 55 लोग उपस्थित थे।

नेपियर घास एक बार लगाएं, 5 वर्षों तक पशुओं को खिलाएं हरा चाराः शशीकांत

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डा.विजेंद्र सिंह के निर्देशन के क्रम में कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर के द्वारा ग्राम मुरीदपुर में पशुपालन विषय के अंतर्गत पशुओं के चारे की समस्या के निवारण के लिए नेपियर घास की वैज्ञानिक खेती विषय पर प्रशिक्षण आयोजित किया गया। जिसमें पशुपालन वैज्ञानिक डॉ शशिकांत ने किसानों को बताया कि नेपियर घास एक वर्षीय चारे की फसल है इसके पौधे गन्ने की भांति लंबाई में बढ़ते हैं एक पौधे से 40 से 50 किल्ले निकलते हैं। यह पशुओं के लिए बहुत ही पौष्टिक चारा है। जो सर्दी गर्मी व वर्षा ऋतु में कभी भी उगाया जा सकता है। जब किसानों के पास गर्मी में हरे चारे की किल्लत होती है। उस समय नेपियर घास पशुओं के लिए हरे चारे के रूप में वरदान साबित होता है। किसान भाई इस घास को एक बार लगा लेने पर 5 साल तक लगातार प्रति महीना इससे हरा चारा प्राप्त कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि इसके लगाने के लिए तने के टुकड़े को लेते है जिसमें कम से कम दो गाठे होनी चाहिए। जिसको एक गांठ जमीन में तथा अन्य गांठ जमीन के ऊपर 45 डिग्री के कोण पर टेढ़ा करके लगाते हैं यह पौधे से पौधे की दूरी 60 सेंटीमीटर तथा लाइन से लाइन की दूरी 1 मीटर रखते हैं इस फसल से वर्ष भर में 150 से 200 हरा चारा प्रति हेक्टेयर प्राप्त हो जाता है।केंद्र के मृदा ववैज्ञानिक डॉक्टर खलील खान ने बताया कि नेपियर घास कई प्रकार की मिट्टियों में उगाई जा सकती है जिसमें प्रचुर मात्रा में जीवांश पदार्थ उपस्थित हो इसके लिए सर्वोत्तम होती है। मृदा का पीएच मान 6.5 से 8 होनी चाहिए। उन्होंने बताया कि चारे में कच्ची प्रोटीन 10 से 11 प्रतिशत, इथर 3प्रतिशत,रेशा 31 से 32प्रतिशत, एनएफ ई 45 प्रतिशत एवं भस्म 14 प्रतिशत पाया जाता है द्य इस मौके पर गांव के प्रगतिशील किसान ईश्वर, धीरेंद्र सिंह, शिवकुमार, धर्मवीर सिंह एवं तकनीकी सहायक गौरव शुक्ला के साथ 55 लोग उपस्थित थे।

दैनिक जागरण कानपुर दे.23/04/2023

नेपियर घास लगाएं, पशुओं को हरा चारा खिलाएं

संवाद सूत्र, सरवनखेड़ा : एक बार नेपियर घास लगाएं और पांच वर्ष तक पशुओं को हरा चारा खिलाएं। यह बात मुरीदपुर गांव में प्रशिक्षण के दौरान कृषि विज्ञानी डा. शशिकांत ने किसानों को बतायी। उन्होंने कहा कि पशु पालन के माध्यम से आमदनी बढ़ाई जा सकती है।

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डा. बिजेंद्र सिंह के निर्देशन में शनिवार कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर के तत्वावधान में एक दिवसीय प्रशिक्षण मुरीदपुर गांव में आयोजित हुआ। किसानों को पशुओं के लिए हरा चारा की समस्या दूर करने के तरीके बताए गए। पशुपालन विज्ञानी डा. शशिकांत ने किसानों को बताया कि नेपियर घास एक बहुवर्षीय चारे की फसल है इसके पौधे गन्ने की तरह लंबाई में बढ़ते हैं साथ ही एक पौधे से 40 से 50 किल्ले निकलते हैं। पशुओं के लिए बहुत ही पौष्टिक चारा है जो सर्दी, गर्मी व वर्षा में उगाया जा सकता है। गर्मी में हरे चारे की किल्लत होती है नेपियर घास पशुओं के लिए वरदान साबित होता है। एक बार लग जाने पर पांच वर्ष तक लगातार प्रति महीना हरा चारा उपलब्ध होता रहेगा। इस मौके पर किसान ईश्वर, धीरेंद्र सिंह, शिव कुमार, धर्मवीर सिंह व तकनीकी सहायक गौरव शुक्ला उपस्थित रहे।

मुरीदपुर गांव में प्रशिक्षण के दौरान नेपियर घास बोए जाने वाले टुकड़ों का प्रदर्शन करते किसान • सौ. डा. खलील खान

ऐसे लगाएं घास

विज्ञानी ने बताया कि तने के टुकड़े को लेते है जिसमें कम से कम दो गांठें होनी चाहिए एक गांठ जमीन में दूसरी ऊपर 45 डिग्री के कोण पर टेढ़ा करके लगाते है। पौधे से पौधे की दूरी 60 सेंटीमीटर व लाइन से लाइन की दूरी एक मीटर रखते है। मृदा विज्ञानी डा. खलील खान ने बताया कि नेपियर घास कई प्रकार की मिट्टियों में उगाई जा सकती है जिसमें प्रचुर मात्रा में जीवांश पदार्थ उपस्थित हो। मिट्टी का पीएच मान 6.5 से 8 होना चाहिए।